# भक्तिमति मीरा बाई

संतों का मत है कि यदि पूछा जाए कि भक्ति किस प्रकार की होनी चाहिए तो कहना पड़ेगा कि भक्ति प्रह्लाद जी के जैसी होनी चाहिए। लेकिन यदि कलियुग के भक्तों में पूछा जाए कि भक्ति कैसी होनी चाहिए तो कहना पड़ेगा कि भक्ति मीरा बाई जैसी होनी चाहिए।

मीरा बाई का चरित्र अगाध है। राजस्थान सरकार द्वारा उन पर एक पुस्तक प्रकाशित की गई थी मीरा सुधा सिंधु। उसमें मीरा बाई का जीवन चरित्र और उनके पद संग्रहीत हैं। यह संकलन प्रामाणिक माना जाता है। इसके अलावा अनेक संतों ने भी उनके लिए अपने अपने भाव व्यक्त किए हैं। जनवाणी के रूप में भी उनके विषय में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। हम भक्तमाल के अनुसार एवं मीरा जी के पदों के आलोक में उनका चरित्र देखेंगे।

मीरा जी के विषय में नाभा जी की वाणी है

लोकलाज कुल श्रृंखला तजि मीरा गिरधर भजी।
सदृश गोपिका प्रेम प्रगट कलिजुगहि दिखायौ।
निरअंकुश अति निडर रसिक जस रसना गायौ।।
दुष्टनि दोष विचारि मृत्यु को उद्यम कीयौ।
बार न बांकौ भयौ गरल अमृत ज्यौं पीयौ।।
भक्ति निसान बजाय कै काहू तै नाहिन लजी।
लोक लाज कुल श्रृंखला तजि मीरा गिरधर भजी।।

लोगों को झूठ सच करने में लाज नहीं आती, किसी की निंदा करने में लाज नहीं आती, किसी को गाली देने में लाज नहीं आती, लेकिन भगवान का नाम लेने में लाज

आती है। कहीं कहीं तो माताएं कीर्तन करती हैं और भगवान का कोई नाम अपने पति या बड़े बुजुर्ग का हुआ तो वह नाम नहीं लेतीं यह विवेक हुआ कि अविवेक! इसलिए गोपियों ने सोचा था कि जिस लोक लाज या कुल की लाज करने से हमारे प्राणधन श्यामसुन्दर हमसे दूर ह्वै जायं ऐसी लज्जा को लेकर हम कहा करें? वाय ओढें कि बिछावें? अब तो या लज्जा को तिलांजलि देनी ही पड़ेगी। उन्होंने लज्जा को छोड़ दिया। शुकदेव जी कहते हैं

विसृज्य लज्जां रुरुदुः स्म सुस्वरं, गोविंद दामोदर माधवेति।।

श्री मीराजी ने भी लोक लाज का त्याग किया, कुल मर्यादा की जंजीरों को भी तोड़ दिया। वैसे तो लोक लाज और कुलकानि माननी ही चाहिए, किंतु जो लोक लाज, कुल–मर्यादा भगवान की भक्ति में बाधक हो उसे रखने से क्या लाभ है? जो भगवत्–प्राप्ति में सहयोगी है उसे रखना चाहिए और जो भगवत् प्राप्ति में विरोधी है, उसका त्याग कर देना चाहिए। षड्विधा शरणागति में इसी को कहते हैं आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रतिकूलस्य वर्जनम्।

भगवान ने महारास के समय गोपियों के सम्मुख प्रकट हो कर कहा

न पारयेऽहं, निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः।
या माभजन् दुर्जरगेहश्रृंखलाः संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना।।

हे गोपियों, देवताओं के समान लम्बी आयु प्राप्त करके मैं तुम्हारी सेवा करूं और प्रेम का बदला चुकाना चाहूं, तो भी नहीं चुका सकता क्योंकि तुम लोगों ने लोक–वेद की जंजीर को तोड़ कर मुझसे प्रेम किया है।

ऐसा या तो द्वापर में गोपियों ने किया था, या कलिकाल में मीरा बाई ने किया। इसलिए कहा लोकलाज कुल श्रृंखला तजि मीरा गिरधर भजी।

इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि जो मीराबाई के समान भगवान के लिए लोक लाज कुलश्रृंखला का त्याग कर देता है, उसे भगवान का भजन नहीं करना पड़ेगा, भगवान ही उसका भजन करते हैं गिरधर भजी अर्थात् गिरधर ने मीरा को भजा, क्योंकि ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। अहर्निश मीरा ने गिरधर को भजा तो गिरधर ने भी मीरा को भजा। भरत सरिस को राम सनेही। जग जपि राम राम जप जेही।।

ऐसी भी अवस्था आती है जब भगवान भक्त का जप करते हैं। मलूकदास जी की एक साखी है

माला जपौं न कर जपौं जिह्वा कहौं न राम।
मेरा सुमिरन हरि करैं मैं पाया विश्राम।

इसका मतलब यह है कि जब तक भगवान की गोद प्राप्त नहीं हुई थी तब तक खूब पुकार रहे थे, लेकिन अब गोद मिल गई है तो भगवान ही प्यार कर रहे हैं। बालक बहुत मां मां करता है, मैया खेल खिलौना देती है तो वह फेंक देता है। तब मां गोद में उठा लेती है, दूध पिलाती है। फिर बालक का मां-मां कहना बंद हो जाता है, मैया ही बेटा बेटा राजा बेटा कहते हुए थपकाती है और बालक सो जाता है।

गोपी प्रेम किसे कहते हैं इसे कलियुग में प्रत्यक्ष करके मीरा जी ने दिखाया। विचार करें तो मीरा का प्रेम गोपियों से भी उत्कृष्ट सिद्ध होता है। वैसे भक्तों में बड़ा छोटा नहीं होता, फिर भी गोपियों का जन्म व्रज में हुआ, श्री कृष्णावतार के काल में हुआ। उनके माता-पिता, सास-ससुर, पति-पुत्र भी सब कृष्ण भक्त थे। उन्हें श्री कृष्ण का दर्शन सहज प्राप्त था, किंतु मीरा जी को कितना संघर्ष करना पड़ा। व्रज की किसी गोपी को मीरा जैसी यातना भोगनी पड़ी हो ऐसा किसी ग्रंथ में नहीं लिखा है। 'सदृश गोपिका प्रेम' का तो तात्पर्य यही है कि द्वापर में जैसा प्रेम गोपियों को मिला, कलिकाल में वैसा ही प्रेम मीरा बाई को प्राप्त हुआ।

***

# पूर्व चरित

ऐसी मान्यता है कि मीरा बाई द्वापर की गोपी ही थी। उनके कुछ पदों में भी ऐसा संकेत मिलता है। एक जगह उन्होंने कहा है

सतयुग में सोती रही त्रेता लियो जगाय।
द्वापर में जाण्यो नहीं अब कलियुग पहुंच्यो आय।।

मीरा जी कहती हैं कि सतयुग में तो मेरी आत्मा प्रसुप्त रही, पर त्रेता में भगवान ने मुझे जगा दिया। इससे संकेत मिलता है कि रामावतार काल में भी मीरा जी थीं, पर पता नहीं वे किस सखी या भक्ता के रूप में थी। वे कहती हैं कि द्वापर में जन्म हुआ तो ऐसी डूब गई कि भगवान को पहचान नहीं सकी। अब कलियुग आ गया। एक जगह कहा है

बहुत दिनां पै प्रीतम पाया बिछुड़न को मोहि डर रे।
मीरा कहै अति नेह जुड़्यो मैं लियो पूरबलो बर रे।।

वे स्वीकार करती हैं कि पूर्व जन्म में वरदान प्राप्त किया था, इसलिए इतना नेह जुड़ा है। किंतु इतने दिनों के बाद प्रीतम को पाया इसलिए बिछुड़ने का बहुत डर है।

नन्द गांव के एक गोप बालक का विवाह बरसाने की एक गोप कन्या के साथ हुआ। वह गौने के बाद अपनी वधू को विदा करा कर ला रहा था, उसी समय प्रेम सरोवर के पास श्री ठाकुर जी गो चारण कर रहे थे। सखा को देख कर ठाकुर जी ने सहज सुलभ प्रेम और चपलता वश कहा “तू अपनी बहू को मोहड़ो मोय नहीं

दिखावेगो?" सखा ने कहा "तेरी भाभी है, तू स्वयं रथ पे चढ़ जा और भाभी को मोहड़ो देख ले। तू तो मेरा प्राण प्रिय सखा है।"

पर इस गोप कन्या की मां ने इसे बहुत अच्छी तरह सिखा पढ़ा दिया था "देख बेटी, तू नन्द गाम बहू बन कर जाय तो रही है, पर वहां एक नन्दराय जी को लाला है। वाको कन्हैया कहैं, श्याम सुंदर कहैं, वो बड़ो ही नटखट है, वाके मोहड़े माऊ देखियो मत और वाय कभी अपना मोहड़ो दिखइयो मत। बामे कछु ऐसो जादू है कि तू देख लेगी तो बावली है जायगी।" वह भोली भाली गोप बालिका अपनी माता की आज्ञा में दृढ़ थी। ठाकुर जी बहुत प्रयत्न करने पर भी उसका मुंह नहीं देख सके, उसने घूंघट से अपना मुंह ऐसा ढक लिया था। ठाकुर जी निराश हो कर उतरे और उतरते उतरते कहा 'एक दिन ऐसो आवेगो कि तू मेरे मोहड़े को देखने कूं तरसेगी।'

कालान्तर में जब ठाकुर जी ने गोवर्धन धारण किया उस समय व्रज पर ऐसा संकट था कि चौरासी कोस के सभी ब्रजवासी अपने गोवंश सहित गिरिराज जी के नीचे आ गए, इसमें वह परिवार भी था जिसकी वह बहू थी। सभी एकटक ठाकुर जी को निहार रहे थे। उस गोपी ने आज जब गिरिराज धारण किए ठाकुर जी को देखा तो वह बड़ी व्याकुल हो गई 'हाय हाय! मैरी मैया ने पता नहीं कौन जनम की दुश्मनी निकाली कि मैंने इतने दिन व्रज में रह कर भी इनका मुखचन्द्र नहीं देखा।' अत्यधिक व्याकुलता से वह मूर्च्छा में चली गई। वह विचार करने लगी कि मेरा तो जीवन ही व्यर्थ है।

श्री ठाकुर जी ने उसकी आर्त अवस्था देखी तो द्रवित हो गए। मीरा सुधा सिंधु के अनुसार यह अनुभूति केवल उस गोपी को ही हुई, अन्य किसी को नहीं। ठाकुर जी से गोपी ने कहा 'हे नाथ! इस अबोधिनी के अपराध को आप भूल जाएं। दुर्भाग्यवश मैंने अपनी मैया की बात मानकर आपका दर्शन नहीं किया, अब मेरा तन-मन-प्राण सर्वस्व आपके चरणों में न्यौछावर है, आप अपने चरणों में स्थान दें।' ठाकुर जी ने कहा 'तूने इस शरीर के द्वारा मेरा तिरस्कार किया है, इसलिए इस देह से तू मुझे प्राप्त नहीं कर सकेगी। किंतु कलिकाल में गोपी-प्रेम धर्म को प्रकट करने के लिए तेरा जन्म होगा, उस समय मैं तुझे अवश्य ही प्राप्त हो जाऊंगा और सदा तुम्हारे साथ ही रहूंगा।'

यही गोपी कलिकाल में भक्तिमति मीरा बाई हुई। लोक लाज और कुल की मर्यादा के कारण इन्होंने भगवान का दर्शन नहीं किया था, इसलिए इतने उच्च वंश में जन्म लेने और राणा वंश में विवाह होने के बाद भी भगवान की उपासना में बाधक जो लोक लाज है उसका मीरा बाई ने त्याग किया **लोक लाज कुल शृंखला तजि मीरा गिरधर भजी।**

मीरा बाई के प्राय: पदों में छाप है मीरा के प्रभु गिरधर नागर .....। इसका कारण भी यही था कि जिस समय गिरिराज धारण किए हुए ठाकुर जी ने इनको वरदान दिया तो वही छवि उनके हृदय में बसी हुई थी, उसी का ध्यान बना रहता था।

**निरअंकुश अति निडर रसिक जस रसना गायो** निरंकुशता अच्छी बात नहीं है, लेकिन मीरा के लिए यही दोष गुण बन गया। ऐसा नहीं कि मीरा ने श्री हरि, गुरु और शास्त्र के अनुशासन को नहीं माना। लेकिन जो झूठ मूठ के मालिक बन रहे थे और अंकुश लगा कर मीरा की भक्ति में बाधा उत्पन्न करना चाह रहे थे, उनसे वे नहीं डरी। भक्त निडर नहीं अति निडर होता है। भगवान ने विभीषण-शरणागति के प्रसंग में घोषणा की है कि जो यह कह देता है हे नाथ, मैं आपका हूं, आपकी शरण में हूं, उसे मैं प्राणिमात्र से निर्भय कर देता हूं।

हमारे खाकचौक वाले महाराज जी ने पैदल पूरे भारतवर्ष ही नहीं अफगानिस्तान, बर्मा और मानसरोवर की भी यात्रा की थी। लगभग इक्कीस वर्ष लगातार पैदल चलते रहे। दो दिन से ज्यादा कहीं नहीं रुकते थे। उन्होंने ही यह अनुभव सुनाया था कि वृंदावन से उज्जैन जा रहे थे। रास्ते में एक गांव में रुके हुए थे। वहीं कुछ चोर भी रुके। रात में सेंध लगा कर उन्होंने चोरी कर ली। वे तो रातों रात भाग निकले, सुबह पुलिस आई तो ये ही साधु मिले। अंग्रेज दरोगा ने कहा 'ऐ बाबा, चलो।' वहां ले गए जहां सेंध लगी थी 'इसमें कैसे घुसे थे, घुस कर बताओ।' उस समय अंग्रेजों का कितना आतंक था, लेकिन महाराज जी तो अपने जीवन में किसी से डरे नहीं। ललकार कर कहा 'श्रीमान जी, मैंने तो जीवन में पहली बार देखा है कि चोरी होती क्या है और सेंध कैसे लगाई जाती है। यह क्या मेरा धंधा है जो मैं घुस कर दिखाऊं। संभल कर बात करो, होश में बात करो।' दरोगा ने थोड़ी देर ऊपर से नीचे महाराज जी को

देखा और फिर बोला 'साधु, साधु, छोड़ दो, छोड़ दो।' इस प्रकार भगवान का भक्त निर्भय होता है अभय रहें, काहू से न डरें।

**रसिक जस रसना गायो** मीरा जी ने अपनी रसना से रसिक शेखर श्याम सुंदर का यश गाया। साथ ही उनके प्यारे भक्तों का भी यश गाया। इसका एक अर्थ यह भी कर सकते हैं कि रसिक शेखर श्याम सुंदर ने मीरा का यश गाया, अथवा रसिकों ने भी मीरा का यश गाया। रसिकाचार्य श्री हरिराम व्यास जी ने कहा है कि पिता कह कर संतों से मिलने वाली इस धरती पर मीरा बाई ही हुई हैं।

**बाल न बांको भयो गरल अमृत ज्यौं पीयो** मीरा जी का बाल भी बांका नहीं हुआ, उन्होंने तो विष को अमृत के समान पी लिया। मीरा जी ने भक्ति का ऐसा नगाड़ा बजाया कि पूरा ब्रह्माण्ड गूंज गया।

भक्ति के स्वरूप को समझना है तो श्री मीरा जी के चरित्र को विस्तार पूर्वक सुनना चाहिए। भक्ति के स्वरूप में यह बात आती है कि भक्ति चावल है और ज्ञान–कर्म उसके ऊपर और अंदर के छिलके हैं। उन छिलकों को हटाने के बाद ही चावल का आस्वादन संभव है। किंतु एक बात यह भी है कि बढ़िया से बढ़िया चावल भी भूमि में बोया जाए अंकुरन नहीं होता। खेती के लिए तो धान ही बोना पड़ेगा। इससे सिद्ध होता है कि ज्ञान और कर्म भी उपेक्षणीय नहीं है। ज्ञान और कर्म जिसके अंग हों, ऐसी भक्ति ही अंकुरित होती है। किंतु जब आस्वादन की बेला आती है तो दोनों छिलकों को अलग कर के बढ़िया खीर बनाई जाती है और ठाकुर जी को भोग लगाया जाता है। इसलिए खेती करनी हो तो साधक के चित्त रूपी भूमि में ज्ञान–कर्म युक्त भक्ति का बीजारोपण कर सत्संग के जल से सींचा जाना चाहिए।

***

# बाल्यकाल

भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास जी के शब्दों में

मेड़तो जनम भूमि, झूमि हित नैन लगे, पगे श्री गिरधारी लाल पिता ही के धाम में।
राणा कै सगाई भई करि ब्याह सामानई, गई मति बूड़ि बा रंगीले घनश्याम में।
भांवरे पड़त मन सांवरे स्वरूप मांझ तांवरे सी आवे चलिबे को पतिग्राम में।
पूछे पिता माता पट आवरण लेजिए जू लोचन भरत नीर कहा काम दाम में।

मीरा बाई का जन्म राठौड़ों की मेड़तिया शाखा के प्रवर्तक राव दूदाजी के द्वितीय पुत्र राणा रतनसिंह जी की पत्नी कुसुम कुंवरि के गर्भ से वैशाख शुक्ला तृतीया अक्षय तृतीया के दिन सन् १५५५ में जोधपुर राज्य के अन्तर्गत मेड़ता में हुआ। प्रेम भक्ति के संस्कार मीरा जी को अपने पितामह दूदाजी की गोद से ही प्राप्त हो रहे थे, पूर्व जन्म की प्रीति और वरदान तो थे ही। वे जब पांच वर्ष की थी तो पुष्कर की यात्रा में आए संतों की जमात मेड़ता आई। (मीरा सुधा सिंधु में वर्णन है कि यह घटना डाकोर में हुई जब मीरा जी दूदा जी के साथ तीर्थ यात्रा में गईं थीं।) उनके साथ उनके सेव्य ठाकुर गिरधर गोपाल जी थे। मीरा जब उनकी सेवा पूजा देखती तो शरीर पुलकायमान हो जाता और समाधि सी लग जाती। संत विचार करते कि यह बालिका पूर्व जन्म की कोई महान भक्ता है। वे संत जब जाने लगे तो मीरा जी मचल गई कि इन ठाकुर जी को मैं ही लूंगी। संत भला अपने सेव्य ठाकुर को किसी को कैसे दे दें? मीरा को विरह व्याप गया, उसने अन्न जल त्याग किया और रोते रोते नेत्र सूज गए। रात को संत के स्वप्न में गिरधर गोपाल जी आए और कहा “बाबा, अब आप विलम्ब मत करो, मुझे अविलम्ब मीरा को प्रदान कर दो, क्योंकि उसके पास जाने के लिए ही मैं आपके पास आया

था।" प्रातः काल स्वयं संत ठाकुर जी को ले कर मीरा के पास गए। मीरा को वह मूर्ति नहीं दिखती, साक्षात् गिरधर दिखते थे। वे प्रेम से उनकी सेवा करती। उनके प्रेम की प्रगाढ़ता बढ़ती चली जा रही थी। दूदा जी ने उनके लिए एक श्याम कुंज बनवा कर उसमें गिरधर गोपाल को पधरा दिया। वर्तमान में ये ठाकुर जी उदयपुर के पीताम्बरराय मंदिर में विराजित हैं।

उदयपुर के पीताम्बरराय मन्दिर में विराजित

मीरावाई के जीवनाराध्य श्रीगिरिधरगोपाल

मीरा बाई श्याम कुंज में भांति भांति से गिरधर गोपाल के लाड़ लड़ाती। दूदा जी के पास अनेक संतों का आना जाना लगा ही रहता था। वे सभी मीरा को देख कर

प्रसन्न होते और मीरा को भी उनका सत्संग प्राप्त होता। उन्हें बार बार सुनने को मिलता था कि भगवत् प्राप्ति के लिए गुरु की परम आवश्यकता है। कभी कभी मीरा बहुत व्याकुल हो जातीं। एक बार उन्होंने दूदा जी से पूछा "मुझे गुरु कैसे मिलेंगे?" दूदाजी ने कहा "आज गुरु पूर्णिमा है। तू श्याम कुंज में अपने गिरधर को रिझा। वे तेरे लिए अवश्य गुरु को बुला देंगे। आज श्याम कुंज में जो संत आएं, उन्हें ही तुम अपना गुरु जानना।"

मीरा बाई बहुत प्रसन्न हुईं और उस दिन संत रैदास संतों की जमात के साथ पुष्कर जाते हुए वहां पधारे। मीरा जी ने उन्हें गुरु रूप में स्वीकारा और उन्होंने राम नाम का मंत्र दिया। मीरा जी की ही वाणी है

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो।।

यह बहुत ध्यान देने की बात है कि 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' कहने वाली मीरा बाई को दीक्षा राम नाम की मिली थी, वे राम-राम ही जपती थी, इसलिए साधकों के मन में राम-नाम या कृष्ण-नाम को ले कर कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए। दोनों नाम एक ही हैं।

मीरा जी ने अनेक जगहों पर स्वीकार किया है गुरु मिले रैदासा। संत रैदास को ही उन्होंने गुरु माना है।

एक दिन मेड़ते में एक बारात आई। गाजा बाजा सुन कर मीरा ने भी कौतूहल वश देखा और पूछा 'मां यह घोड़े पर बैठा हुआ कौन है?' मां ने कहा 'बेटी यह तेरी अमुख सखी का बींद (दुल्हा) है।' मीरा ने पूछा 'मां मेरा बींद कौन है?' मां ने हंस कर कह दिया 'तेरा बींद तो गिरधर गोपाल है।' मीरा ने स्वीकार कर लिया कि यही मेरे पति हैं। इस प्रकार बाल्य काल में ही यह भाव प्राप्त हो गया। बाल्य काल में ही उन्हें योग विद्या और संगीत विद्या भी प्राप्त हो गई थी। राव दूदा जी अपनी पोती के

लिए सारी व्यवस्था करते और उसे देख देख कर बड़े प्रसन्न होते। मीरा जी पद रचना भी करने लगी।

मीरा जी को विवाह के पूर्व ही भगवत् साक्षात्कार भी हो गया। उनके पदों में विरह व्यथा और संयोग सुख–दोनों का वर्णन मिलता है।

नातो नाम को जी म्हासूं तनक न तोर्‍यो जाय।

इसमें मीरा जी ने वर्णन किया है कि गिरधर के वियोग में भोजन न करने से पीली पड़ गई, लोगों ने कहा पिंड–रोग हो गया। बाबुल ने वैद्य को बुला कर नब्ज दिखाई जा बैदां घर आपणे रे म्हारो नाम न ले, मैं तो पागी विरह की तू औषध काहे को दे।

अपनी विरह दशा का वर्णन करती हुई मीरा जी बताती हैं कि मांस गला जा रहा है, तन छीज रहा है। कभी घर में, कभी आंगन में इधर उधर खड़ी होती हूं म्हारी व्यथा न बूझे कोय।

इस पद का अंत तो बहुत ही मार्मिक है

काढ़ कलेजो मैं धरूं, कागा तू ले जाय। जा देसां म्हारो पिय बसे, वे देखें तू खाय।
म्हारे नातो नाम को रे और न नातो कोय। मीरा व्याकुल विरहणी हरि दर्शन दीजो मोय।

मीरा जी की ताईजी चित्तौड़ की थीं। उनके भतीजे थे राणा भोजराज। मीरा की ताईजी चाहती थीं कि दोनों का विवाह हो जाए, पर मीरा को यह अभीष्ट नहीं था। उन्होंने माता से कहा भी कि एक बार आपने ही कहा था कि गिरधर मेरे पति हैं और मैंने स्वीकार भी कर लिया मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोय। मां ने कहा 'वह तो मैंने ऐसे ही वाणी से कह दिया था किंतु लोक मर्यादा के लिए विवाह तो तुम्हें करना ही पड़ेगा। यदि इस संबन्ध को ठुकराया गया तो चित्तौड़ इतना बलवान राज्य है कि राणा सांगा मेड़ता का अस्तित्व मिटा देंगे, इसलिए तुम्हें यह विवाह स्वीकार करना होगा।'

भोजराज को बुआ को लिवाने के बहाने मेड़ता बुलाया गया। मीरा के चचेरे भाई जयमल उन्हें राजमहल में सब स्थान दिखा रहे थे। तभी उनके कानों में भजन की बड़ी सुंदर ध्वनि पड़ी तो जिज्ञासा हुई। जयमल ने कहा 'कुंवर साहब, मेरी बहन है मीरा। मुझसे चार साल बड़ी है। वह अपने सेव्य ठाकुर गिरधर गोपाल जी को एकान्तिक श्याम कुंज में लाड़ लड़ा रही है। उनका समय गिरधर गोपाल की अष्टयाम सेवा में ही व्यतीत होता है। यह उन्हीं के गायन की ध्वनि है।' यह सुन कर भोजराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और इनके मन में आया कि मैं जब से मेड़ता आया हूं, इस भक्तिमति की गाथा मेरे कानों में पड़ रही है, इस भक्तिमति के दर्शन मैं भी करूं। उन्होंने पूछा 'क्या मुझे भी गिरधर गोपाल और इनकी अनन्य अनुरागिणी मीरा का दर्शन हो सकता है?' जयमल ने कहा 'अवश्य, आप ही का महल है, पधारें, लेकिन हमारी जीजी मीरा के भजन भाव में विक्षेप नहीं होना चाहिए।' (यह प्रसंग 'मीरा चरित' में तो बहुत ही सुंदर ढंग से लिखा गया है, हम तो संक्षेप में ही स्मरण कर रहे हैं)

मीरा तानपूरा लेकर गा रही थी गिरधरलाल प्रीति मत तोड़ो... भोजराज ने दर्शन किया, बहुत देर तक खड़े रह कर उस दिव्य पद का श्रवण किया और मीरा जी की भाव दशा को देख कर उनके ह्दय में आनन्द की लहर सी दौड़ गई। वे मन में विचार करने लगे कि मैंने इस प्रकार की अनुरागिणी राजकन्या पहली बार देखी सुनी है जिसे शरीर संसार की सुध-बुध नहीं है। उनके मन में आया कि यह भक्तिमति कन्या चित्तौड़ पहुंच जाए तो हमारे कुल का भी उद्धार हो जाए। हमारा अत्यन्त सौभाग्य होगा, चित्तौड़ वृंदावन बन जाएगा। इससे स्पष्ट है कि भोजराज का ह्दय बहुत निर्मल और भक्ति पूर्ण था।

वास्तव में उनके संबध की चर्चा तो मेड़ता में चल ही रही थी और इसीलिए मीराजी बहुत व्याकुल थी। उनकी सुनने समझने वाला कोई नहीं था, इसीलिए तो श्याम कुंज में गिरधर गोपाल को व्यथा निवेदित कर रही थी। आंखों से अश्रुधार बह रही थी। जयमल लौटना चाह रहे थे तभी पद पूरा हुआ तो मीरा की नजर उन पर पड़ गई। जयमल ने प्रणाम किया और पूछा 'जीजी, इस प्रकार क्यों रो रही हो?' मीरा ने कारण बताया तो भोजराज को बहुत ही संकोच हुआ। फिर जयमल ने भोजराज का परिचय

दिया तो मीरा भी अत्यन्त सकुचा गई। सारी बातें समझते हुए भोजराज ने ही मौन तोड़ते हुए कहा 'मीराजी, वास्तविक अपराधी मैं ही हूं। मेरे कारण ही आपको इतनी पीड़ा हो रही है। लेकिन आप अच्छी तरह जानती हैं कि मेड़ता और चित्तौड़ का प्रगाढ सम्बंध दोनों के लिए हितकारी है। फिर भारतीय ललनाएं तो अपने माता पिता की आज्ञा के अधीन रहती हैं। आपकी गिरधर गोपाल के प्रति जो निष्ठा है वह अत्यन्त आदरणीय है। मैं भी इस निष्ठा को देख कर नतमस्तक हूं, किंतु आप जैसी भक्तिमति चित्तौड़ पधारेंगी तो यह चित्तौड़ का सौभाग्य होगा। मैं आपको वचन देता हूं, मैं केवल आपकी सन्निधि प्राप्त करके श्री कृष्ण चरण कमल में प्रीति चाहता हूं, मुझे आपसे किसी सांसारिक सम्बंध की अभिलाषा नहीं है। मैं आजीवन पूज्य भाव से आपका दर्शन करता रहूंगा, कभी भी पत्नी भाव से आपका स्पर्श नहीं करूंगा। आपको चित्तौड़ में अपने भजन भाव में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी।'

कितना कठोर निर्णय लिया भोजराज ने! अंत तक निभाया भी पूरी तरह और स्वयं मीरा के अनुरोध करने पर भी दूसरे विवाह के लिए तैयार नहीं हुए, वर्ना उस काल में राजपूतों में तो बहु विवाह की प्रथा प्रचलित थी ही। किंतु भोजराज ने वैवाहिक सुख को पूर्णतः मीरा की भक्ति पर न्यौछावर कर दिया। मीरा बाई के चरित्र गान में प्रायः भोजराज जी का उदात्त चरित्र और उनकी मौन साधना अनकही ही रह जाती है।

अपनी शपथ सुना कर भोजराज चले गए, मीरा जी को भी कुछ समाधान मिल गया लगता है गिरधर गोपाल एक प्रारब्ध की पूर्ति के लिए हमें चित्तौड़ भेजना चाहते हैं। भोजराज जैसे सहज, सरल, निष्काम भक्तियुक्त पुरुष के द्वारा हमारी भक्ति की सुरक्षा होगी, ये हमारी ढाल बनकर रक्षा करेंगे। वे ठाकुरजी के सामने इकतारा ले कर बैठ गईं हे प्रियतम, अब हमारी निष्ठा का निर्वाह भी हो जाए और माता पिता की चिंता का समाधान भी हो जाए, ऐसा कुछ उपाय प्रस्तुत करें। मीरा जैसे ही भाव राज्य में आईं तो उन्हें गिरधर गोपाल की वाणी सुनाई दी तुम बिलकुल मत घबराओ। तुम्हें प्रत्यक्ष अनुभव होगा कि पाणिग्रहण के समय तुम्हारी भांवरी मेरे साथ पड़ रही है। विवाह के प्रत्येक रिवाज में तुम्हारे आगे आगे मेरी उपस्थिति रहेगी। तुम्हारे आगे मैं और मेरे आगे भोजराज रहेंगे। संसार को यही दिखाई पड़ेगा कि भोजराज और मीरा का पाणिग्रहण हो

रहा है, लेकिन मैं रहूंगा वहां। तुम मेरी मूर्ति साथ रखना। मैं ही तुम्हारा बींद बनकर आऊंगा, तुमको प्रत्यक्ष अनुभव होगा कि मेरे पीताम्बर से तुम्हारी चुनरी की गांठ जोड़ी जा रही है।

ठाकुर जी का आश्वासन पाकर मीरा जी को चैन मिला। अब विवाह के रीति रिवाज होने लगे। विवाह उत्सव की तैयारी बड़े उत्साह से होने लगी। विवाह के पूर्व का दिन आ गया। मीरा व्याकुल हो रही थी, गिरधर ने कहा था कि मैं बींद बनकर आऊंगा, अब तक तो आए नहीं। इसी व्याकुलता में ठाकुरजी को शयन करा कर पौढ गई। आज ठाकुर जी ने स्वप्न में मीरा का वरण किया। अत्यंत सुंदर वेश में दूल्हा बनकर श्यामकर्ण घोड़े पर बैठ कर आए। बाजे बज रहे हैं, ग्वाल बाल भी बराती बन कर आए हैं। द्वाराचार सम्पन्न हुआ। फिर स्वप्न में ही ग्रंथिबन्धन, भांवरी, सिंदूरदान आदि सारे नेगचार हुए। पिताजी गिरधर गोपाल को कन्यादान कर रहे हैं, मंत्रोच्चार हो रहा है, मीरा अत्यंत प्रसन्न है। चारों ओर हर्ष का वातावरण है।

इस प्रकार भोजराज से विवाह के पहले ठाकुर जी ने विधिवत् मीरा से विवाह किया। स्वप्न में विवाह में जो हल्दी चढ़ाई गई, मेहंदी लगाई गई वह जाग्रत अवस्था में भी मीरा को लगी हुई थी इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है। इतना ही नहीं, विवाह में मीरा जी को नन्द बाबा द्वारा अनेक वस्त्र आभूषण दिए गए, वे भी जाग्रत अवस्था में मीरा जी के पास थे। मीरा जब जागी तो सारे चिन्ह उनके श्रीअंग पर थे। ठाकुर जी ने जो चढावा चढाया था वे दिव्य वस्त्र और आभूषण, हाथों में मेहंदी, सिंदूर, महावर आदि का सुंदर श्रृंगार था।

माना तो यही जाता है कि स्वप्न तो मिथ्या है, पर हमारे वैष्णव सिद्धान्त में तो यह जगत् सत्य स्वरूप परब्रह्म परमात्मा में अधिष्ठित है, इसलिए यह मिथ्या नहीं हो सकता है। यह मिथ्या नहीं है, यह तो भगवान का लीला विलास है। यह समाधान हम उनके लिए प्रस्तुत कर रहे हैं जो जगत् को मिथ्या मानते हैं चलो हमने मान लिया कि स्वप्न मिथ्या है, लेकिन स्वप्न में करुणा करके साक्षात् ठाकुर जी पधारें तो क्या आपमें यह कहने का साहस है कि स्वप्न में आए हुए ठाकुर जी मिथ्या हैं। यदि कोई ज्ञानी

ऐसा भी हो जो यह कह दे, तो उस ज्ञानी को दूर से ही हमारी दण्डौत है। स्वप्न भले ही मिथ्या हो पर स्वप्न में दर्शन देने वाले ठाकुरजी कभी मिथ्या नहीं हो सकते। जब अन्त:करण विशेष पवित्र हो जाता है, उस समय तो स्वप्न भी स्वप्न नहीं रह जाते हैं, सच्चे हो जाते हैं। राम चरण रति निपुण विवेका ऐसी अनुरागिणी त्रिजटा भी कहती है सपने बानर लंका जारी, और दूसरे ही दिन हनुमान जी ने लंका जला दी।

हमारे वृंदावन में वेणुविनोद कुंज वाले बाबा बाल कृष्ण दास जी सिद्ध संत थे। उनके पास एक पंडित मोतीराम जी रहते थे। वे मध्य प्रदेश के किसी स्थान से आए थे। बाबा कभी कहीं रहते कभी कहीं, उन्हें लगा कि संतों के भजन करने के लिए एक स्थान हो जाए तो अच्छा हो। उन्होने गांव जाकर अपनी जगह जमीन बेच कर वेणु विनोद कुंज वाली जगह खरीदी थी। बाबा को कहते 'महाराज जी, आप तो अपने परिकरों सहित केवल भजन करें। रोटी मांग कर लाने की सेवा हमारी।' वे मधुकरी मांग कर संतों के प्रसाद की व्यवस्था करते। हमने उनका दर्शन किया है। अत्यधिक श्रम के कारण क्षय रोग ने उन्हें घेर लिया। दवा के पैसे नहीं थे, संतों की व्यवस्था नहीं करेंगे तो वे भजन कैसे कर पाएंगे इसकी भी चिंता। रक्त की उलटी भी हो गई। वे सोचने लगे मैं वृंदावन आया तो साधु सेवा के लिए, और अब उन्हें मेरी सेवा करनी पड़ेगी। मेरे प्राण छूट जाएं तो अच्छा हो।

सत्य घटना है, मोती राम जी सोए तो स्वप्न में एक महात्मा जी आ कर बोले 'भगत जी, आपकी साधु सेवा से हम बहुत खुश हैं, आप मरने की बात क्यों सोचते हैं? आपका रोग सदा के लिए चला जाएगा, लो यह पुड़िया खा लेना, ठीक हो जाओगे।' स्वप्न में उन्होंने अपनी झोली से निकाल कर पुड़िया दी और इन्होंने रख ली। जागने पर स्वप्न के बारे में सोचने लगे और सचमुच उन्हें अपने तकिये के नीचे पुड़िया मिली। उन्होंने पुड़िया खा ली और पानी पी लिया। इसके बाद मोती राम जी बहुत तगड़े हो गए। रोग न जाने कहां चला गया। जब तक जिये संतों की संवा करते रहे।

इसलिए भैया, स्वप्न में सांसारिक वस्तुएं दीखें तो भले ही मिथ्या हों पर भगवान दीखें, संत महात्मा दीखें तो उनका दर्शन सत्य होता है।

हमारे गुरुदेव के पास हरे राम बाबा रहते थे। बहुत अच्छे संत थे। उनकी आयु लगभग सौ वर्ष की हो गई थी। हमारे गुरुदेव चाहते थे कि वे वृंदावन में ही रहें पर वे घूमते रहते थे। एक बार कहीं गए थे, पैर फिसल गया और कूल्हे की हड्डी टूट गई। हठी बहुत थे, अस्पताल गए नहीं और देसी इलाज से ठीक नहीं हुए। उस गांव के लोगों ने उन्हें एक भक्त के पास जयपुर भेज दिया, पर वे भी बाबा की ठीक से सेवा नहीं कर पाए और बाबा का मन भी नहीं लगा।

उस समय हम सुदामा कुटी में थे। दोपहर के दो बजे विश्राम कर रहे थे। हमें स्वप्न आया कि एक लड़का पैंट और पॉलिस्टर की शर्ट पहने हुए है, थ्री व्हीलर में बाबा को ले कर आया और जहां रामलीला के समय जेनरेटर रखा रहता है, वहां बाबा को बिठा कर बोला 'लो, बाबा को सम्हालो,' और चला गया। हम हड़बड़ा कर उठे और दरवाजा खोला तो वही आदमी था जिसे हमने आधी मिनट पहले स्वप्न में देखा था। हमारे कुछ कहने के पहले ही उसने कहा 'मैं जयपुर से आया हूं, गौड़ जी का लड़का हूं। मैं अकेला बाबा की सेवा नहीं कर पा रहा। पिताजी ने इन्हें यहां पहुंचाने को कहा। मैंने उन्हें जेनरेटर के पास बैठा दिया है और अब मैं जा रहा हूं।'

मैंने उससे कुछ और पूछना चाहा पर वह रुका नहीं और थ्री व्हीलर में बैठ कर चला गया। थ्री व्हीलर भी वैसा ही था जैसा हमने स्वप्न में देखा था। बाबा भी उसी मुद्रा में बैठे मिले जैसा हमने स्वप्न में देखा था। हमने दण्डवत किया तो बोले 'हमें महाराजजी के पास ले चलो।' हमें समझ नहीं आता कि स्वप्न को मिथ्या मानने वालों से हम क्या कहें, हमने तो इधर स्वप्न देखा, उधर सत्य हो गया। सारे ही सपने तो सच नहीं होते, लेकिन हमारी तो मान्यता यही है कि कई बार भगवान भविष्य में होने वाली घटना को स्वप्न के माध्यम से दिखा देते हैं और जिसे भगवान दिखाना चाहते हैं वह घटना झूठी कैसे हो सकती है?

जहां साक्षात् गिरधर गोपाल पाणिग्रहण करने को पधारें वहां तो स्वप्न सत्य होना ही है। माता ने पूछा 'मीरा, यह मैं क्या देख रही हूं, आज दिन में बारात आएगी, रात में विवाह के सब विधि विधान होंगे और तू पहले से ही दुलहिन के साज सजा कर

बैठी है, यह सब कहां से आया? ऐसे दिव्य आभूषण तो यहां कोई बना भी नहीं सकता, ये तो इस लोक के मालूम नहीं पड़ते।'

सौभाग्य कुंवर राणावत जी ने 'मीरा चरित' लिखा है जो प्रामाणिक ग्रंथ है। उसमें लिखा है कि वे वस्त्र आभूषण वैसे ही थे जैसे कि बाद में चित्तौड़ से आए, किंतु उनकी दिव्यता की कोई बराबरी नहीं थी। बाद में राणा भोजराज की श्रद्धा देख कर मीरा जी ने उन्हें भी वे दिव्य वस्त्राभूषण दिखाए। मीरा जी का यह पद बहुत प्रसिद्ध है

माई म्हाने सुपणें में बरी रे गोपाल।
राती बीती चुनरी ओढ़ी मेहंदी हाथ रसाल। ....
कांई और कूं बरूं भांवरी म्हाको जग जंजाल।।

मीरा जी मां को बताती हैं कि रात में स्वप्न में गिरधर गोपाल ने मुझसे विवाह किया। मेरे हाथों में मेहंदी रचाई गई, चूनर ओढ़ाई गई और भांवरी हुई। अब मैं दूसरे के साथ क्या भांवरी फेरूं, यह सब कुछ तो जंजाल है।

मां ने कहा 'मीरा, अब किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, यह सब तो दीख ही रहा है। अब तो जो लोक व्यवहार करना है वह तो करना ही होगा नहीं तो हम सब पर बड़ा संकट आ जाएगा।' मीरा ने भी मान लिया कि जन्म भूमि के कुशल क्षेम की खातिर स्वयं संकट सह लूंगी। अब तुम जैसा चाहो कर लो।

सं० १५७२ में महाराणा सांगा के युवराज भोजराज के साथ मीरा जी का विवाह बहुत धूमधाम से हुआ। लोगों की दृष्टि में तो मीरा जी की चूनर का छोर भोजराज के पटके से बंधा हुआ था, लेकिन मीरा अनुभव कर रही थी कि यह गिरधर के पीताम्बर से बंधा हुआ है। मीरा को बहुत दहेज–उपहार दिए गए। मीरा की मां ने कहा 'मीरा तुम्हें जो जो वस्त्र और आभूषण चाहिए, तुम ले लो।' मीरा ने कहा 'मां, मुझे तो गिरधर गोपाल को ही दे दो, बाकी माल धन अपने पास रखो।' प्रिया दास जी वर्णन करते हैं

देवौ गिरधारी लाल, जो निहाल कियो चाहौ, और धन माल सब राखिए उठाइके।

बेटी अति प्यारी, प्रीति रंग चढ्यो भारी, रोय मिली महतारी, कही लीजिए लड़ायकै।।

प्यारी बेटी मीरा पर प्रेम का यह रंग चढ़ा देखकर मां ने रोते रोते गले से लगा लिया और कहा 'गिरधारी लाल को तुम ले लो और प्रेम से इनकी पूजा-सेवा करो।'

मीरा जी के डोले में ही गिरधर को पधरा दिया गया। मीरा डोले में बैठ उनके नेत्रों से नेत्र मिलाते हुए चली। अपने प्राण पति को पा कर वे सुख से फूली नहीं समा रही थीं।

***

# ससुराल में

डोला पधराय, दृग दृग सों लगाय चलीं, सुख न समाय चाय, प्राण पति पायकै।
पहुंची भवन सासु देवी पे गमन कियौ, तिया अरु बर गंठ जोरी कर्‍यो भायकै।।

मीरा जी ससुराल पहुंची तो सास ने देवी पूजा की तैयारी की। भोजराज ने प्रेम से देवी का पूजन किया और फिर मीरा को पूजन करना था। मीरा जी का मस्तक तो गिरधर गोपाल के हाथों बिक चुका था, उनकी अनन्यता ऐसी थी कि वे गिरधर को छोड़ कर किसी की सेवा में अपने किसी अंग का लगना सहन नहीं कर सकती थी। उनका एक पद है जिसका भाव यह है कि जो पलकें गिरधर को न निहारने दें उन्हें काट डालूं, जो जीभ नन्दनंदन का नाम न भजे, उसे काट डालूं, जो बुद्धि हरिनाम बिसार दे वह भी कट जाए, जो हृदय उनके चरण कमल को छोड़ और किसी को धारण करे वह हृदय भी जल जाए, जो शीश गिरधर को छोड़ किसी और को नमन करे उसे काट कर कुएं में डाल दूं

पल काटौं सही इन नैननिके, गिरधारी बिना पर अन्तनिहारे।

जीभ कटै न भजै नन्दनंदन, बुद्धि कटै हरिनाम बिसारे।।
मीरा कहे जरि जाउ हियो पद कंज बिना मन औरहि धारे।
शीश नवे व्रजराज बिना वहि शीशहिं काटि कुवां किन डारै।।

वैसे तो भगवत् स्वरूपों में भेद करना अपराध माना गया है, पर ऐसी दृढ़ अनन्यता यदि किसी की हो तो दूसरी किसी देवी या देवता की पूजा करने से मना करना गलत नहीं कहा जा सकता। मीरा जी का देवी से कोई विरोध नहीं है, लेकिन उन्होंने नम्रता पूर्वक कह दिया कि मेरा मस्तक तो गिरधर के हाथों बिक चुका है, जिस हाथ से पूजा करूंगी, वह भी उन्होंने पकड़ लिया है तो बिना मस्तक और हाथ के देवी की पूजा कैसे होगी? आप लोग करें।

सास ने समझाया 'बहू, जिद मत कर देवी की पूजा से सुहाग बढ़ता है।' मीरा ने कहा 'मेरा सुहाग तो पहले से अमर है।' उनकी वाणी है

ऐसे बर को का बरूं जो जन्मे औ मर जाए।
बर बरिये गोपाल जी जासूं चुड़लो अमर हो जाय।

प्रिया दास जी कहते हैं

देवी के पुजायबे कौं, कियो ले उपाय सासु, बर पे पुजाय, पुनि वधू पूजि माखिये।
बोली जू बिकायौ माथो लाल गिरधारी हाथ, और को न नवे एक वही अभिलाखिए।।
बढ़त सुहाग याके पूजे ताते पूजा करौ जिन हठ सीस पायनि पै राखिए।
कही बार बार तुम यही निरधार जानौ, वही सुकुमार जापै वारि फेरि राखिये।।

मीरा की बात सुन कर सास क्रोध से जल भुन गई यह बहू अभी अभी तो आई है और राज परिवार की इतनी स्त्रियों के बीच मुझ राजमाता का इतना घोर अपमान!

आगे की तो क्या आशा की जाए। वह इतनी दुखी हो गई कि बस अब तो मैं प्राण ही त्याग दूंगी। उसने राणा सांगा को जाकर सब कहा

तब तौ खिसानी भई, अति जरि बरि गई, गई पति पास 'यह बधू नहीं काम की।
अब ही जबाब दियो, कियौ अपमान मेरौ, आगे क्यों प्रमान करै?' भरै स्वास चाम की।

सास की सांसें लोहार की धौंकनी की तरह चल रही थीं। राणा सांगा को भी बड़ा क्रोध आया और मन मन में मीरा को रास्ते से हटा देने का विचार कर लिया। प्रकट में कहा यह कि बहू की पूजापाठ में रुचि है, उसे एकान्त में रहना अच्छा लगेगा। उन्होंने मीरा के लिए एक ऐसा महल साफ सफाई कर तैयार करा दिया जो भुतहा था। उनके खानदान के कुछ ऐसे लोग थे जिनकी सद्‌गति नहीं हुई थी, वे प्रेत योनि में उस महल में वास करते थे। वहां कोई रह नहीं सकता था, दिन में भी लोगों को डर लगता था। मीरा जी तो बहुत प्रसन्न हुई और वहां अपने गिरधर गोपाल को पधरा दिया। मीरा जी ने जब शंख घुमा कर जल छिड़का तो उसकी बूंदें उन प्रेतों पर भी पड़ीं। वे सब भूत योनि से मुक्त हो गए, उन्हें दिव्य देह प्राप्त हो गया और सब मीरा की जय जयकार करते हुए स्वर्ग चले गए। मीरा जी भी बड़ी प्रसन्न हो गईं, अब उन्हें एकान्त मिल गया। वहां गिरधर गोपाल की सेवा होने लगी। प्रियादास जी ने कहा है

राना सुनि कोप कर्‌यौ, धर्‌यौ हिए मारिबोई, दई ठौर न्यारी, देखि रीझि मति बाम की।
लालनि लड़ावै गुन गायके मल्हावै, साधु संगहि सुहावै, जिन्हें लागी चाह श्याम की।।

एक बात हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि संत महात्मा अपने जीवन के बारे में स्वयं कुछ नहीं बताते। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना की तो स्वयं को रचनाकार भी नहीं बताया कहा कि यह कथा तो शिव जी ने पार्वती जी को सुनाई थी, मैं तो बस उसी को भाषा बद्ध कर रहा हूं। फिर अपना परिचय एक चौपाई में बताया

कि मैं श्री राम का भक्त हूं, लेकिन वंचक भक्त, अर्थात् वह जो स्वामी के साथ छल करे।

ऐसे जो संत भक्त हैं वे क्या वर्तमान लेखकों की भांति अपना जीवन चरित्र, जन्म तिथि, भगवान के दर्शन की तिथि, आत्मसाक्षात्कार की तिथि बताएंगे अथवा मनाएंगे? इसीलिए संतों का जीवन चरित्र बिलकुल सही सही बताना कठिन है। नाभाजी और प्रियादास जी ने किसी की जन्म तिथि आदि नहीं बताई, क्योंकि उनका विषय इतिहास नहीं है। वे तो हर भक्त की वे बातें बताना चाहते हैं जो हमारे लिए भगवत् प्राप्ति में सहायक हैं। इसलिए मीरा जी के चरित्र के वर्णन में यदि यत्र तत्र कुछ भिन्नता मिलती है तो उस पर ध्यान न देकर भक्ति के भाव पर दृष्टि रखनी चाहिए।

मीरा जी के महल में राणा सांगा द्वारा नियुक्त दासियों ने जब सारी घटना का वर्णन किया तो राणा सांगा की आंखें खुल गईं और उन्होंने समझ लिया मीरा की महिमा को और निश्चय किया कि अपने जीते जी मीरा को कोई तकलीफ नहीं होने दूंगा।

मीरा जी को वह एकान्त महल बहुत प्रिय लगा और वे वहां प्रसन्नता से भजन, साधना और सत्संग करने लगीं। जब तक भोजराज जी थे तब तक मीरा जी की साधना में कोई विक्षेप नहीं आया। मीरा जी के चरित्र में भोजराज जी का चरित्र प्रायः अज्ञात रह जाता है, पर वे उच्च कोटि के साधक थे, वे मीरा जी से उन्नीस नहीं थे। उनके भक्ति भाव और उदात्त चरित्र को जानना हो तो सौभाग्य कुंवरि राणावत का लिखा हुआ 'मीरा चरित' पढ़ना चाहिए।

***

# भोजराज का पावन संग

जैसा कि भोजराज जी ने वचन दिया था, वे मीरा की ढाल भी बने रहे और कभी भी उन्हें पत्नी भाव से नहीं देखा। वे समय समय पर मीरा की भाव दशा को देखते तो आश्चर्यचकित हो जाते। गिरधर गोपाल की चर्चा करते करते मीरा की आंखें अधमुंदी हो जाती, उसके झरते आंसू ऐसे लगते थे मानों मोतियों की लड़ियां टूट कर झर रही हों। कहीं कोई दिखावा नहीं रहता था पर भोजराज समझ नहीं पाते थे कि क्या ऐसा भी सम्भव है? वे सब कुछ समझना चाहते थे और मीरा जी उनकी जिज्ञासा को शांत करने योग, भक्ति, उपासना आदि की बातें बताया भी करती थीं। इस प्रकार दोनों के बीच सतसंग की धारा बहती रहती थी।

एक दिन भोजराज ने प्रश्न किया 'क्या आपने कभी साक्षात् दर्शन किये?' उत्तर में मीरा की आंखें भर आईं। किसी प्रकार अपने को सम्भालते हुए रुंधे गले से विवाह की पूर्वरात्रि को स्वप्न में गिरधर गोपाल के साथ हुए परिणय की बात बताई, भांवरी का वर्णन किया और गिरधर द्वारा पहनाए हीरे के हार को भी दिखाया जो अभी भी उनके गले में पड़ा था। आश्चर्यचकित हो भोजराज ने पूछा 'क्या यह वह हार नहीं है जो मैंने भेंट किया था?'

'वह तो गिरधर के गले में है।'

'क्या मैं यह हार देख सकता हूं?'

'अवश्य।'

मीरा ने हार निकाल कर भोजराज की हथेली पर धर दिया। भोजराज ने देखा, सर से लगाया और वापस लौटा दिया। मीरा ने बताया 'चित्तौड़ से आया चूड़ा, वस्त्र, गहने मैने पहने ही नहीं, सब ज्यों का त्यों धरा है।' भोजराज के अनुरोध पर मीरा ने चित्तौड़ और द्वारका से आई दानों पेटियों को मंगा कर दिखाया। दासियों ने पेटियां खोल कर सारी सामग्री अलग अलग रख दी। आश्चर्य से भोजराज ने देखा सब कुछ एक सा,

लेकिन चित्तौड़ का वैभव ठाकुर जी के चढावे के सामने तुच्छ था। भोजराज ने श्रद्धापूर्वक सबको माथे से लगाया। सब यथास्थान रख कर दासियां चली गईं तब भोजराज ने मीरा के चरणों में सिर धर दिया, नेत्रों के जल से मीरा के चरणों का अभिषेक करते हुए गद्‌गद् कंठों से कहा 'अब आप ही मेरी गुरु हैं। मुझ मतिहीन को पथ सुझा कर ठौर ठिकाने पहुंचा देने का काम करें।' मीरा ने उन्हें संभाला, उठा कर गद्‌दी पर बैठाया और जल पिलाया। भोजराज ने कहा 'श्री चारभुजा नाथ की कृपासे भोजराज के सौभाग्य का तो अवश्य ही उदय हो गया है जो आपके जैसी भक्तिमति का साहचर्य और पथ प्रदर्शन मुझे प्राप्त हुआ। मैं धन्य हो गया। यह सिसोदिया वंश धन्य हो गया।' मीरा बहुत लज्जित हो गईं। उन्होंने कान पर हाथ रख लिया 'महाराज, ऐसा कह कर मुझे लज्जित न करें। इस चर्चा को छोड़ कर भगवत् चर्चा करें। झूठी मान बड़ाई में कुछ सार नहीं है।' भोजराज ने कहा 'संसार में यदि किसी का किसी से स्वार्थ होता है तो वह कई बार झूठी प्रशंसा भी बहुत अधिक कर देता है, लेकिन हमारा और आपका कोई स्वार्थ से सना हुआ संबन्ध नहीं, श्री गिरधर गोपाल के नाते का संबन्ध है, इसलिए सच्ची बात कहने में मैं कोई संकोच नहीं करूंगा।'

मीरा जी ने कहा 'आपके अन्त:करण की जो भूमिका है वह भगवत् प्रेम की प्राप्ति के लिए बहुत उर्वरा है। बस अब आवश्यक यही है कि एक क्षण भी व्यर्थ न जाए, आप प्रभु के नाम रूप, गुण, लीला का चिंतन करते रहें।'

इसके बाद तो दोनों के बीच साधन चर्चा नित्य का क्रम हो गया। कभी कभी भोजराज के छोटे भाई कुंवर रतनसिंह भी भैया से मिलने पधारते तो चर्चा में सम्मिलित हो जाते। भाभी मीरा के प्रति उनके हृदय में भी श्रद्धा घनीभूत होती गई।

एकबार भोजराज ने प्रश्न किया 'क्या परमार्थ साधने के लिए घर परिवार और व्यवहार से सर्वथा अपना मुख मोड़ना पड़ता है?' मीरा जी ने कहा 'नहीं, आवश्यक नहीं है। जनक जी भी तो राजा थे। वे व्यवहार में किसी प्रकार का प्रमाद नहीं करते थे। अम्बरीश भी चक्रवर्ती सम्राट थे, प्रजा का पालन करते हुए ही उन्होंने भगवान की आराधना उपासना की। ध्रुव, प्रह्लाद, विभीषण, सभी प्रजा पालक थे, अत: अपने अपने

वर्ण आश्रम धर्म के अनुसार संसार के समस्त व्यवहार करते हुए परमार्थ बहुत अच्छी तरह निभ सकता है।'

देखिए, वास्तव में तो हमारे अन्तःकरण की ऐसी स्थिति बन जानी चाहिए कि हमें छोड़ना न पड़े, सब छूट जाए। यदि अन्तःकरण ऐसा नहीं बना और किसी लौकिक समस्या में पड़ कर हमने छोड़ दिया तो जितना छोड़ा जाएगा उससे अधिक बटोर लिया जाएगा। त्याग का दंभ बढ जाएगा।

भोजराज ने कहा 'आज मुझे पूर्ण समाधान मिल गया। मैं प्रजा के प्रति, अपने माता पिता के प्रति अपने कर्तव्य और राजकीय व्यवस्था का निर्वाह करते हुए अपने को गिरधर गोपाल के चरणों में लगाने का प्रयत्न करता रहूंगा। बस इसके लिए आपके आशीर्वाद की अपेक्षा है।' मीरा ने कानों पर हाथ रखते हुए कहा 'नहीं, बस गिरधर गोपाल के चरणों में प्रेम रहे।'

परम लावण्य युक्त मीरा जी और कामदेव जैसी कांति वाले भोजराज का मिलन जगत्-वासना शून्य मिलन है। बक्सर वाले मामाजी ने उपमा दी है कि गिरधर गोपाल तो राम जी के रूप में हैं, मीरा बाई सिया जू के रूप में हैं और भोजराज लक्ष्मण जी के रूप में सजग प्रहरी हैं।

धन्य संतवर भोजराज मीरा के संयत सहचर।
भई नेह निधि नारायण मति चरणन माहि न्योछावर।
हे कलियुग के भीष्म सिसोदिया तुम्हारी जय हो।
तुम्हारे इस निर्मल प्रेम की जयजयकार हो।
तुम्हारे परम वासना शून्य अन्तःकरण की जयजयकार हो।
हे चित्तौड़ के गौतम तुम्हारा ध्यान कर भक्तों का जीवन पथ मंगलमय हो।
हे चित्तौड़े गौतम तुम्हरे संयम पर बलिहारी।
अथवा तुम्हरे रूप में प्रकटे योगेश्वर गिरधारी।

इस प्रकार मीरा जी के साहचर्य से भोजराज की साधना बढती गई। उनका व्यवहार दिन पर दिन सात्विक होता गया। अब आमोद प्रमोद, तड़क भड़क आदि में रुचि नहीं रही। न उत्तम वस्त्रों में रुचि है, न किसी से विशेष बातचीत करने में। किंतु

कर्तव्य पालन में तनिक भी प्रमाद नहीं। राणा सांगा भोजराज की प्रत्येक गतिविधि पर निगाह रख रहे थे। लोग उनसे भी कहते ‘मेड़तनी जी तो युवराज को बाबाजी बना देंगी’, लेकिन राणा देख रहे थे कि भोजराज की भक्ति उनके कर्तव्य पालन में कहीं बाधक नहीं। उनका भी मन होता कि भक्तिमति मीरा के दर्शन कर जीवन को कृतार्थ करें, लेकिन राजघराने की राजपूती मर्यादा ने बांध रखा था। भोजराज से कोई पूछता ‘यह क्या’, तो हंस कर टाल देते। महाराणा सांगा ने रतनसिंह द्वारा दूसरे विवाह के लिए भी पुछवाया। उत्तर मिला  गंगा तट पर रहने वाले को डाबर का गंदा पानी पीने का मन नहीं होता। मीराजी ने भी एक बार कहा किंतु भोजराज राजी नहीं हुए। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि रतनसिंह का विवाह करा दिया जाए।

एकबार भोजराज ने मीरा जी से कहा ‘आपको कोई कष्ट या असुविधा हो तो हुकम करें।’ मीरा ने कहा ‘एक निवेदन है। मेड़ते में संत पधारते रहते थे, किंतु यहां मुझे संतों के मुख से भगवत् कथा सुनने को नहीं मिल पाती।’

महलों में तो संतों का प्रवेश संभव नहीं था। भोजराज ने महल के बाहर एक मंदिर बनवा दिया जहां चित्तौड़गढ आने वाले संत महात्मा आ सकें। मीराजी वहां दर्शन के लिए नित्य जातीं, कभी कभी भोजराज भी जाते। वर्तमान में भोजराज द्वारा प्रतिष्ठित यह श्री विग्रह नूरपुर में विराजित है।।

मीरावाई के गिरधरगोपाल

भोजराज द्वारा निर्मित मन्दिर में प्रतिष्ठित श्रीविग्रह

भोजराज के निर्देश से वहीं संतों के आवास आदि की भी व्यवस्था कर दी गई थी। संतों की आवाजाही नित्यप्रति बढती गई। मीरा उन्मुक्त भाव से सत्संग लाभ करती, गाती और नृत्य भी करती। राणा सांगा सोचते यदि मैं महाराणा या ससुर न होकर साधारण जन होता तो मैं भी सबके बीच बैठ कर सतसंग सुधा का पान कर लेता।

भोजराज की माताजी, बहन ऊदा तथा अन्य अनेक लोग थे जो मीरा की निन्दा करते और कोसते, किंतु भोजराज उनकी ढाल बने सब कुछ अपनी छाती पर झेल लेते। राणा सांगा भी मीरा का आदर करते थे अतः चाह कर भी कोई मीरा का अनिष्ट नहीं कर पाता था। मीरा भोजराज के रक्त की एक एक बूंद में समाई हुई थी। वे जब युद्ध के लिए जाते तो मीरा के लिए चिंतित रहते थे। आगरा में एक युद्ध में वे बुरी तरह घायल हो गए। अपने अंत समय में छोटे भाई रतनसिंह से वचन लिया कि मीरा की पूरी सार संभाल करेंगे। अंत काल में ठाकुरजी ने प्रत्यक्ष दर्शन दे कर कहा ‘भोज, तुमने मीरा की नहीं, मेरी सेवा की है। मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूं। तुम मेरे हो। अब कहो और क्या चाहिए तुम्हें?’ ठाकुरजी ने उन्हें हाथ बढा कर उठाया और अपनी छाती से लगा लिया।

***

# राणा विक्रमसिंह के अत्याचार

हर भक्त के चरित्र में कोई न कोई खलनायक जरूर होता है। इसका बड़ा विशिष्ट स्थान है, खलनायक के बिना भक्त की भक्ति उजागर नहीं होती। ठाकुर जी ही लीला करते हैं। वे खलनायक को जीवन में भेजते हैं और टटोल टटोल कर भक्त के चित्त को देखते रहते हैं कि इस समय इसकी क्या अवस्था है, फिर चित्त की संभार तो

करते ही हैं। थोड़े ही समय में राणा सांगा भी चल बसे और रतनसिंह भी युद्ध में मारे गए।

रतन सिंह जी के बाद उनके सौतेले भाई राणा विक्रम सिंह गद्दी पर बैठे। वे उम्र में मीरा जी से बहुत छोटे थे और विमुख थे। कहावत है करेला और नीम चढ़ा। राणा विक्रम सिंह करेला तो था ही, ननद ऊदा बाई ने नीम का कार्य किया। उनका विवाह तो गुजरात की किसी रियासत में हुआ था, किंतु कुछ राजकीय संघर्ष के कारण वह ससुराल जा ही नहीं पाई थी, चित्तौड़ में ही रह गई। भोजराज जी और उनके छोटे भाई के जाने के बाद वह परम स्वतन्त्र हो गई। उसने राणा विक्रम सिंह की बुद्धि को अपने कब्जे में कर लिया। अब दोनों मीरा जी को सताने और मारने के भांति भांति से प्रयत्न करने लगे।

प्रियादास जी वर्णन करते हैं कि ऊदा बाई ने मीरा जी से कहा कि आप साधु संग करती हैं इससे राणा खानदान और आपके पिता के कुल को भी कलंक लगता है, आप इसे छोड़ दीजिए

आयकै नन्द कहै 'गहै किन चेत भाभी! साधुनि सो हेत में कलंक लागे भारियै।
राना देस पति लाजै, बाप कुल रीति जात, मानि लीजै बात बेगि संग निवारियै।।

मीरा जी ने कहा मेरे प्राण सदा साधुओं के साथ लगे रहते हैं इसलिए उनके संग से मुझे अपार सुख का अनुभव होता है। मेरे आचरण से जिनको दुख होता है उसे मुझसे बिलकुल अलग रखो

लागे प्रान साथ संत, पावत अनन्त सुख, जाको दुख होय, ताको नीके करि टारिये।
सुनिकै कटोरा भरि गरल पठायो दियौ, लियौ करि पान रंग चढ्यो यों निहारियै।।

मीरा जी की बात सुन कर राणा का खून खौल उठा। उसने राज वैद्य को आदेश दे कर हलाहल विष बनवाया और दयाराम पण्डा के द्वारा यह कह कर भिजवा दिया

कि यह चरणामृत है। मीरा जी की विश्वास पात्र सखी ने बहुत कहा कि यह चरणामृत नहीं विष है। राणा विक्रम ऐसा भक्त नहीं है कि आपको चरणामृत भेजे, लेकिन मीरा जी ने पूरा कटोरा पी लिया। पी लेने के बाद तो उनके अंगों में और भी एक विशेष प्रकार की कांति दिखाई देने लगी।

राणा के गुप्तचरों ने सूचना दी तो राणा को लगा कि वैद्य ने धोखा दिया है, उसने वैद्य को विवश किया कि कटोरे में लगी बूंदों को पिए। वैद्य तो एक बूंद भी नहीं पी पाया और तत्काल मर गया। उसके परिवार वाले बहुत दुखी हो कर रोते हुए मीरा के पास पहुंचे, दयाराम पण्डा भी बहुत रोने लगा कि मेरा कोई दोष नहीं है, राजकर्मचारी होने के नाते राणा की आज्ञा का पालन मेरी विवशता थी। मुझे क्षमा कर दीजिए।

मीरा जी ने वैद्य की मृत देह को गिरधर गोपाल के सामने रख एक पद गाया और वह जीवित हो गया। इस घटना से ऊदाबाई का हृदय तो परिवर्तित हो गया पर राणा विक्रम को अभी भी सुबुद्धि नहीं आई। प्रियादास जी कहते हैं

गरल पठायौ सो तो सीस ले चढ़ायौ, संग त्याग विष भारी ताकी झार न संभारी है।
राना ने लगायो चर, बैठे साधु ढिग ढर, तबही खबर कर मारौं यहै धारी है।

मीरा जी ने राणा विक्रम के भेजे विष को तो पी लिया, लेकिन साधु–संगति के त्याग की बात उन्हें विष समान ही लगी और उन्होंने स्वीकार नहीं किया। तब राणा ने उनके भवन में गुप्तचर लगा दिए और कहा कि जब मीरा के पास कोई साधु आ कर बैठे तो मुझे सूचना देना, मैं उसी समय उसे मार डालूंगा, यही मैंने निश्चय किया।

मीरा बाई के महल में तो गिरधर गोपाल नित्य विराजते थे और उनसे वार्तालाप भी होता था। एक दिन उनके हंसने बोलने की ध्वनि गुप्तचरों के कानों में पड़ी तो उन्होंने राजा को खबर दी। राणा तलवार ले कर दौड़ा आया और कहा 'दरवाजा खोलो।' मीरा जी ने दरवाजा खोला तो वहां कोई साधु नहीं दिखाई पड़ा। उसने पूछा 'तुम जिस पुरुष के साथ रमण कर रही थी वह कहां है?' मीरा जी ने कहा 'वह

पुरुष नहीं, पुरुषोत्तम है जो तुम्हारे आगे ही विराजमान है।' राणा खिसिया गया, गिरधर गोपाल के विग्रह में उसे नृसिंह भगवान दिखाई दिए। गनीमत यही थी कि उन्होंने हिरण्यकशिपु के समान उसकी छाती विदीर्ण नहीं की। वह वहां से चला आया।

प्रेम का प्रत्यक्ष प्रभाव देख कर भी विमुख का हृदय नहीं बदलता, राणा के मन में फिर भी सद्‌भाव उत्पन्न नहीं हुआ। उसने फिर एक और प्रयास किया एक पिटारे में महाविषधर सांप यह कह कर भिजवाया कि इसमें शालिग्राम हैं। इस घटना पर मीरा जी का पद है

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय।
सांप पिटारा राणा भेज्या मीरा हाथ दियौ जाय।
न्हाय धोय जब देखन लागी सालिग्राम गई पाय।।
जहर का प्याला राणा भेज्या अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवन लागी होई अमर पचाय।।
सूल सेज राणा ने भेजी दीजो मीरा सुलाय।
सांझ भई मीरा सोवन लागी मानो फूल विछाय।।
मीरा के प्रभु सदा सहाई राखे विघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पै बलि जाय।।

हमारी संस्कृति में साधु–वेश का बड़ा महात्म्य है और इसकी आड़ में अनेक दुष्ट भी अपनी करनी करते रहे हैं रावण ने भी जानकी जी के अपहरण के लिए साधु का वेश बनाया था, कालनेमि ने भी हनुमान जी को रोकने के लिए साधु का ही वेश बनाया था और वर्तमान समय में भी पवित्र वेश को कलंकित करने वाले पाखण्डी अनेक हैं, लेकिन ये कुछ काल के लिए भले ही अपनी धाक जमा लें, आखिर सबकी पोलपट्टी खुलती है और उनकी बड़ी दुर्गति होती है।

रामानन्दाचार्य जी के जीवन प्रसंग में आता है कि कलियुग उनका शिष्य बना। उसने आकर कहा 'महाराज, मैं अनेक बड़े बड़े ऋषियों के पास गया पर सबने मुझे

कुपात्र कह कर ठुकरा दिया। अब आपकी शरण में आया हूं, मुझे मत ठुकराना।' आचार्य चरण ने उसे शिष्य बना दिया और मंत्रोपदेश दिया। फिर उसने कहा "मुझे कुछ सेवा बताइए। आचार्य जी ने कहा 'वैसे तो मैं अपने शिष्यों से कुछ लेता नहीं हूं पर तुम्हारे जैसा मजबूत शिष्य मिला है तो कुछ दक्षिणा ले ही लेनी चाहिए।'

"हां महाराज, बताइए।"

"देखो, तुम साधु पुरुषों को कष्ट मत देना।"

"महाराज मुझे आपका आदेश स्वीकार है। जो सीधे साधे साधु हैं उनपर मैं अपना कोई प्रभाव नहीं डालूंगा लेकिन जो दम्भी, कपटी, पाखण्डी हैं उन्हें तो मैं पहले खूब ऊंचा ले जाऊंगा और फिर बड़ी जोर से पटकूंगा।"

"ठीक है, ऐसा ही करना।"

लेकिन कभी कभी किसी कपटी साधु पर सच्चे संत की दृष्टि पड़ जाती है तो उसका कपट छूट जाता है और वह सच्चा साधु बन जाता है। मीरा जी के जीवन में भी ऐसा प्रसंग आया। एक धूर्त व्यक्ति उनके सौन्दर्य से आकर्षित हो गया। उसने साधु का वेश बनाकर मीरा जी से कहा 'आपके आराध्य श्री गिरधर गोपाल जी ने कहा है कि तुम मीरा को अपना अंग संग प्रदान करो।' मीरा जी ने कहा 'गिरधर की दुहाई देने की आवश्यकता ही नहीं, आप की आज्ञा ही पर्याप्त है, अच्छी बात है। आप स्नान कीजिए, प्रसाद पाइए।' इसके बाद संतों के संकीर्तन के बीच ही पलंग बिछवा कर कहा 'आपको भगवान ने जो आज्ञा दी है उसका पालन कीजिए।'

अब तो वह विषयी कुटिल व्याकुल हो गया। मीरा जी ने कहा 'भगवान की वाणी तो कभी पापमयी हो नहीं सकती, पाप कर्म व्यक्ति अकेले में करता है, भगवान की आज्ञा पालन करने में संकोच कैसा?'

सब साधु उठ खड़े हुए कौन है यह? क्या कहा था इसने? इसे मारो, मारो। वह मीरा जी के चरणों में पड़ कर रोने लग गया। मीरा जी ने स्नेह पूर्वक कहा 'आपने जो वेश धरा है उसकी मर्यादा का पालन कीजिए।' भगवान की ही वाणी है

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यक्व्यवसितोहि सः।।

किसी के जीवन का पूर्व समय भले ही दुराचार पूर्ण रहा हो, लेकिन वह शरणागत होकर सच्चे मन से भजन का निश्चय करता है तो उसके कल्याण में कोई संदेह नहीं है, उसे साधु ही मानना चाहिए।

विषयी कुटिल भी मीरा जी की कृपा से सच्चा भक्त हो गया। प्रियादास जी ने वर्णन किया है

विषई कुटिल एक भेष धरि साधु लियौ, कियौ यौ प्रसंग 'मोसो अंग संग कीजियै।
आज्ञा मोको दई आप लाल गिरधारी, अहो सीस धरि, लई, कर भोजन हूं लीजियै।।
संतनि समाज में बिछाय सेज बोलि लियौ, संक अब कौन की निसंक रस भीजियै।
सेत मुख भयौ, विषै भाव सब गयौ, नयौ पायन पे आय 'मोको भक्तिदान दीजियै'।।

एक बार अकबर ने तानसेन से पूछा "सब श्याम सुंदर पर न्यौछावर हैं, उस पर रीझ रहे हैं, वह भी किसी पर रीझता है क्या?" तानसेन ने कहा "वह श्याम सुंदर इस समय मीरा बाई पर आसक्त है।" यह सुन कर अकबर का मन हुआ मीरा जी के दर्शन करने का। वह तानसेन के संग वेश बदल कर आया और गिरधर गोपाल की छवि और मीरा जी के भक्तिभाव भरे सौंदर्य को देख निहाल हो गया।

रूप की निकाई भूप अकबर भाई हिये, लिये संग तानसेन देखिबे को आयो है।
निरखि निहाल भयो छबि गिरधारी लाल, पद सुख जाल एक तबही चढ़ायौ है।

मीरा जी की भक्ति कैसी अद्भुत थी कि तानसेन और अकबर को भी साधु का बाना पहना दिया और दर्शन की लालसा जगा दी।

तानसेन जन्मजात ब्राह्मण थे, उनका नाम था तन्ना मिश्र। वे ग्वालियर के थे। बचपन से ही गाने का अभ्यास था। शंकर जी के एक मंदिर में रोज जाकर पूजा करते थे पुष्प, दूध चढ़ाते। एक बार बड़ी बाढ़ आई हुई थी, फिर भी तानसेन वहां पहुंचे। उस दिन गाय तो मिली नहीं, एक बकरी का दूध ही दुह कर भोले बाबा को चढ़ा दिया।

भोले बाबा प्रसन्न हो गए बोले वृदावन चले जाओ। स्वामी श्री हरिदास जी की कृपा हो गई तो तुम्हें राग रागिनियां सिद्ध हो जाएंगी।

उसे स्वामी जी की कृपा तो मिली लेकिन उसने धन के लिए अकबर की सेवा स्वीकार कर ली इसलिए ब्राह्मणों ने उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया। यद्यपि वह स्वयं मुसलमान नहीं बना, लेकिन अकबर ने उसका विवाह दो यवन कन्याओं से करा दिया और उसके दो पुत्र हो गए बड़े मियां, छोटे मियां। तानसेन अब मियां तानसेन हो गया। संगीत में मियां मल्हार, मियां की तोड़ी, बड़े मियां का मल्हार, छोटे मियां का मल्हार आदि राग बने।

मीरा जी ने साधु वेश धारियों से पूछा 'आपकी क्या सेवा करें?' उन्होंने कहा 'हम तो आपका और आपके ठाकुर जी का दर्शन करने आए हैं, आप ठाकुर जी को कुछ गा कर सुनाएं, बस यही हमारी सेवा है।' मीरा जी ने उस समय गाया बसो मेरे नैंनन में नन्द लाल।

फिर तानसेन ने भी मीरा जी की अनुमति ले कर गाया

सुमरन हरि का करौ रे जासों होय भवपार....

तानसेन कहै निर्मल सदा लहिए नर देही नहीं बार बार।

ऊदा बाई बार बार आकर देखती रहती थी कि कौन आया, कौन गया। उसने राणा विक्रम को बताया कि इतना बढ़िया गायक तो चित्तौड़ में कभी नहीं आया और उसने जो गाया उसमें तानसेन की छाप भी थी। राणा ने सोचा, तानसेन गवैया है, उसकी बंदिशें दूसरे लोग भी गाते रहते हैं, किसी ने गाया होगा।

लेकिन बाद में अकबर ने चिट्ठी भेज कर बता भी दिया। चित्तौड़ की चुनौती थी कि अकबर प्रवेश नहीं कर सकता, किंतु अकबर चित्तौड़ में आया ही नहीं, रनिवास मीरा जी के महल तक प्रवेश कर गया और वापस भी लौट गया। अब तो राणा के क्रोध का क्या कहना! उसने मीरा से कहा 'अब तो तुमने हमारी प्रतिष्ठा सर्वथा समाप्त ही कर दी। हमारे जीते जी चित्तौड़ में अकबर कैसे आ गया?' मीरा ने कहा "ठाकुर के दर्शन करने के लिए साधु संतों का आवागमन तो बना ही रहता है,

अब संत वेश में कोई आ जाए तो हमें क्या पता?” “नहीं, हमने सुना है कि तुम्हारे ठाकुर जी को कोई भेंट दे गया है।” “हां, यह हार है।”

कारीगरों ने सूक्ष्मदर्शी से देखा तो प्रत्येक दाने पर अकबर लिखा था। राणा ने कहा ‘मैं स्वयं देखनाा चाहता हूं।’ ठाकुर जी की लीला ऐसी थी कि दुबारा देखने पर हर मनके पर गिरधर लिखा मिला। आज विक्रम तलवार से काट ही डालने का निश्चय कर के आया था पर जब मनकों पर गिरधर लिखा देखा तो उसके मन में आया कि अकबर ने झूठ लिखा है, उसकी हिम्मत कहां कि चित्तौड़ आए। गिरधर की कृपा से मीरा जी फिर संकट से मुक्त हो गई।

आए दिन इस प्रकार की घटनाओं से मीरा जी का मन खिन्न हो गया और उन्होंने संत तुलसीदास जी को पत्र लिखा। साधक को किंकर्तव्यविमूढता की स्थिति में समाधान प्राप्ति के लिए संत से ही सम्मति लेनी चाहिए, ऐसे अनेक प्रकरण हमारे शास्त्रों में आए हैं।

एक बार हमारे साथ भी कुछ विकट परिस्थित आ गई। उस समय रामानन्द जयंती के अवसर पर पूज्य बक्सर वाले मामाजी (नारायण दास जी भक्तमाली) वृंदावन आए थे। हमने उन्हें कुछ अपनी ओर से नहीं बताया था, किंतु उन्हें एक एक बात मालूम हो गई। उन्होंने एकान्त में हमें बुलाया और कहा कि मुझे एक एक बात पता है, आपको लोग कैसे परेशान कर रहे हैं। फिर कहा ‘क्या आप इसका समाधान चाहते हैं?’ हमने कहा ‘भगवत् कृपा से हो जाए तो अच्छा हो।’ वे बोले ‘देखो दो समाधान हैं एक हनुमान जी वाला और दूसरा भरत लाला जी वाला।’ हमने कहा ‘महाराज जी, दोनों बताइए।’

‘हनुमान जी वाला समाधान तो यह है जिन मोहि मारा तिन मैं मारे। तेहि पर बांधे तनय तुम्हारे।। जैसे को तैसा ईंट का जवाब पत्थर से। जो तुम्हें परेशान कर रहे हैं, मठ मंदिर की मर्यादा को नष्ट कर रहे हैं लड़ो उनसे, कमर कस कर तैयार हो जाओ।

‘भरत लाला जी वाला समाधान है जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई, करुणासागर कीजिए सोई।। अपना कोई आग्रह नहीं रखना, भगवान जो करेंगे वह ठीक करेंगे। सब बात भगवान पर छोड़ दो।’

हमने कहा 'महाराज जी, लड़ाई झगड़ा करने की प्रवृत्ति बाल्य काल से ही नहीं रही। बचपन में भी कभी किसी को पीट कर आए हों ऐसा हमें स्मरण नहीं। इसलिए हनुमान जी वाला समाधान हमारे बस की बात नहीं। दूसरा वाला हमें बहुत अच्छा लगा।' महाराज जी बोले 'मेरे राम को भी यही समाधान ठीक लगता है इसलिए जीवन में जब कभी ऐसी परिस्थिति आती है, हम तो यही प्रार्थना करते हैं जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई, करुणा सागर कीजिए सोई।'

फिर उन्होंने कहा 'मंदिर जाते हो न, यही चौपाई बोल कर ठाकुर जी को तुलसी चढ़ाना।' हमने कहा 'जैसी आपकी आज्ञा।' हमने वैसा ही किया और उसका परिणाम यह हुआ कि वह सारा व्यवहारिक संकट छू-मंतर हो गया। लड़ाई झगड़े में पड़ते तो साधुता जाती और पता नहीं क्या क्या होता! सत्पुरुषों के पास समाधान रखा रहता है, बस स्वीकार करने की जरुरत है। राणा से तंग आकर श्री मीरा जी ने तुलसीदास जी को पत्र लिखा

स्वस्ति श्री तुलसी गुण-भूषण दूषण हरण गुसाई।
बारहिं बार प्रणाम करौं, अब हरो शोक समुदाई।।
घर के स्वजन हमारे जेते सबन उपाधि मचाई।
साधु संग हरिभजन करत मोहिं देत क्लेश महाई।।
बालापन ते मीरा कीन्हीं गिरधर लाल मिताई।
सो तो अब छूटत नहीं क्यों हू लगन लगी बरि आई।।
मेरे तात मात के सम हौ हरि भक्तन सुखदाई।
मोकूं कहा उचित करिबौ है सो लिखिए समुझाई।।

उत्तर में तुलसी दास जी ने यह पद लिखा

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।।
तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी।

बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज बनितन भे मुद मंगलकारी।।
नातो नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौं।
अंजन कहां आंख जो फूटे बहुतक कहौं कहां लौं।।
तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्रान ते प्यारो।
जासो होय सनेह राम पद एतो मतो हमारो।।

***

# वृंदावन में

तुलसीदास जी की वाणी मीरा जी को बाण के समान लगी और वे चित्तौड़ छोड़ कर वृंदावन चली गईं। ऐसी भी प्रसिद्धि है कि राणा ने गिरधर की मूर्ति को सरोवर में डाल दिया था। मीरा जी प्रेम–व्याकुल हो कर सरोवर में कूद गईं और आश्चर्य जी बात! निकली वृंदावन में वंशीवट क्षेत्र में यमुना जी से। वे प्रेम में बेसुध हो रही थीं।

मीरा चित्तौड़ से चल कर वृंदावन जाती तो मार्ग में राणा कुछ उपद्रव कर सकता था, ठाकुर जी ने अपने संकल्प से उन्हें वृंदावन भेज दिया। प्रेम बावरी मीरा जैसे ही जल से बाहर निकली, उन्हें दिव्य वृंदावन का दर्शन हुआ। ललिता, विशाखा, रंगदेवी, सुदेवी, चित्रा आदि जो राधा रानी की अष्ट सखियां हैं उन्होंने सखी मीरा को संभाल लिया, हृदय से लगा लया। मीरा जी व्याकुल हो कर बस एक ही शब्द कह रही थीं दीपक, दीपक, दीपक। उनका अभिप्राय यह था कि प्रेम, भक्ति, ज्ञान–वैराग्य का प्रकाश करने वाला कोई संत यहां है क्या? उस समय वैष्णव जगत् के अप्रतिम विद्वान श्री जीव गोस्वामीपाद वृंदावन में विराज रहे थे। नाभा जी ने उनके लिए लिखा है कि

श्री रूप–सनातन के प्रेम की धारा जहां स्थिर है उस सरोवर का नाम है जीव गोस्वामी। व्रजवासियों ने बताया  जीव गोस्वामी बाबा ही दीपक हैं।

प्रेम बावरी मीरा सीधे पहुंची उनके पास। संतों की अपनी अपनी मर्यादा होती है। सेवकों ने मीरा जी का नाम बताए बिना कहा 'महाराज, चित्तौड़ के राज परिवार की एक महिला आपके दर्शन के लिए आई है।' जीव गोस्वामी परम विरागी थे, उन्होंने कहा 'नहीं, मना कर दो।' सेवक ने आकर कहा 'आप क्षमा करें, आचार्य चरण का नियम है वे किसी नारी का मुख नहीं देखते, नारी से सम्भाषण नहीं करते।' मीरा जी प्रेम के आवेश में थीं 'मेरा भी निमय है, मैं गिरधर के अतिरिक्त किसी पुरुष को न देखती हूं, न बातचीत करती हूं। मैं तो इस निमित्त वृंदावन आई थी कि वृंदावन में पुरुष एकमात्र श्री कृष्ण हैं, बाकी सब गोपी हैं, पर बड़ा आश्चर्य है, आज उनके अतिरिक्त और कोई पुरुष भी वृंदावन में आ गया।'

देखिए, जीव गोस्वामी का तो सिद्ध मंजरी भाव था, लेकिन संन्यास की मर्यादा की रक्षा के लिए उन्होंने यह नियम बना रखा था, जैसे ही यह बात उनके कान में पड़ी, वे समझ गए कि यह कोई सामान्य स्त्री नहीं है। ध्यान में देखा अरे यह तो साक्षात् गिरधर की प्राणसखी मीरा बाई हैं। अब तो वे दौड़ कर मीरा बाई से मिले। श्री हरिराम व्यास जी ने लिखा है जैसे कोई पुत्री पिता से मिले, वैसे मीरा जी जीव गोस्वामी से मिलीं। यह भी वर्णन मिलता है कि मीरा जी ने उनका सत्संग प्राप्त किया और उन्होंने मीरा जी को चैतन्य महाप्रभु का चरित्र भी सुनाया। इसे सुनकर मीरा जी के चित्त में बड़ा अनुराग उत्पन्न हुआ और उनका एक पद महाप्रभु को समर्पित है सारे जगत में जो माखन चोर के नाम से प्रसिद्ध हैं, आज वे ही चैतन्य महाप्रभु के रूप में प्रकट हो कर संन्यासी वेश में लीला कर रहे हैं।

हरि नाम लौ लागी अब तो हरिनाम लौ लागी।
सब जग को यह माखन चोरा नाम धर्‌यो वैरागी।।
कित छोड़ी वह मोहनी मुरली कत छोड़ी सब गोपी।
मूड़ मुड़ाय डोरि कटि बांधी माथे मोहन . . . . .

मातु जसुमति माखन खावन बांधे जाके पांव।
श्याम किशोर भयो नव गौरा चैतन्य जाको नांव।।
पीताम्बर को भाव दिखावे कटि कौपीन कसे।
गौर कृष्ण की दासी मीरा रसना कृष्ण बसे।।

प्रिया दास जी ने मीरा जी के वृंदावन आने की बात इन शब्दों में कही है

वृंदावन आइ, जीव गुसांई जू सो मिली झिली, तिया मुख देखिबे को पन लै छुटायो है।
देख कुंज कुंज लाला प्यारी सुखपुंज भरी, धरी उर मांझ, आय देस बनगायो है।

वृंदावन में मीरा जी को पूर्व जन्म की स्फूर्ति हुई और ठाकुर जी की लीला में प्रवेश मिला। किंतु मीरा जी अधिक दिन वृंदावन में नहीं रहीं क्योंकि राजस्थान की सीमा वृंदावन से लगी हुई है, मीरा जी से मिलने राजस्थान से अनेक लोग आने लगे। उनके चचेरे भाई राव जयमल भी आए, उन्हें मना कर अपने संग ले जाने के लिए। इससे मीराजी के भजन में भी विक्षेप हो रहा था और रसिकाचार्यों की भजन परिपाटी में भी व्यवधान हो रहा था।

तब मीरा जी ने गिरधर से पूछा 'अब मैं क्या करूं।' ठाकुर जी ने कहा, 'तुम द्वारका चली आओ। तुम्हारे लिए तो मेड़ते में ही वृंदावन प्रकट था, चित्तौड़ में वृंदावन प्रकट हो गया तो फिर क्या द्वारका में वृंदावन नहीं है।' मीरा द्वारका चली आईं।

***

# द्वारका में

इधर मीरा जी के जाते ही चित्तौड़ श्रीहीन हो गया। राणा विक्रम के ही सेवक बलबीर ने राणा को मौत के घाट उतार दिया। राणा ने तो मीरा पर तलवार खींची थी सो तो खिंची ही रह गई थी लेकिन बलबीर ने तो गरदन पर तलवार चला ही दी। जो अपराध भक्त कर करई, राम रोष पावक सो जरई। राणा बेमौत मारा गया। बलबीर उसके पुत्र उदय सिंह को भी मारना चाहता था किंतु पन्ना धाय ने अपने इकलौते बेटे का बलिदान करके उदय सिंह को बचा लिया। उदयसिंह के ही आगे चल कर पुत्र महाराणा प्रताप हुए जिन्हें कौन नहीं जानता।

चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे तो उदयसिंह संभाल नहीं पाए, अकाल पड़ गया, महामारी फैल गई। उन्होंने विद्वानों को, संतों को बुलाया। उन्होंने कहा जब तक मीरा प्रसन्न होकर यहां नहीं आएंगी तब तक चित्तौड़ का भाग्य जगने वाला नहीं है। उदयसिंह ने ब्राह्मणों और मंत्रियों को द्वारका भेजा और कहा जैसे भी हो, आप मीरा जी को ले आइये। वे आकर मुझे प्राणदान दे जीवित करें। हम उनसे क्षमा याचना करेंगे

राना की मलिन मति, देखी बसीं द्वारवति, रति गिरधारी लाल नित ही लड़ाइयै।
लागी चटपटी भूप भक्ति की सरूप जानि, अति दुख मानि, विप्र श्रेणी ले पठाइयै।
बेगि लै के आवौ मोकों प्रान दे जिवावौ अहो गए द्वार धरनो दे विनती सुनाइयै।

पुनः स्पष्ट कर दें कि कई लोगों को भ्रम है कि राणा विक्रम ने ही मीरा जी को बुलाया, लेकिन यह ठीक नहीं है। विक्रम तो मारा गया था। जब उदय सिंह गद्दी पर बैठे, तब उन्होंने मीरा जी को बुलाया था। मीरा जी द्वारका में भक्ति पूर्ण जीवन व्यतीत कर रही थी। ब्राह्मणों ने निवेदन किया मारवाड़ का सौभाग्य और सिंगार तो आपके ही

साथ है। आपका जो तिरस्कार किया गया उससे वह धरती रसहीन हो चुकी है। आपका अपराधी राणा विक्रम बेमौत मारा गया। राणा उदयसिंह और सम्पूर्ण प्रजा पलक पावड़े बिछा कर आपकी प्रतीक्षा कर रही है। मीरा जी ने कहा 'अब तो गंगा समुद्र में आ मिली है, अब वापस नहीं जा सकती।' ब्राह्मणों ने अनशन कर लिया। अब तो वे व्याकुल हो गईं। ब्राह्मण साक्षात् भगवान के स्वरूप होते हैं, इन्होंने प्राण त्याग दिए तो क्या होगा। उन्होंने रोते हुए कहा 'आप लोग मुझे ले जाने का हठ मत करो, मुझे तो अब बस गिरधर के चरणों में वास चाहिए।' ब्राह्मण नहीं माने तो उन्होंने कहा 'आप लोग इतना हठ कर रहे हो तो सामने ये द्वारिकाधीश हैं, मैं इनसे पूछ लूं?' ब्राह्मणों ने कहा 'पूछ लीजिए।' मीरा जी ने द्वारकाधीश को कहा, 'हे नाथ, अपने निकट लाकर भी फिर संसार की ओर धकेलोगे? मैं नहीं जाना चाहती।' आज मीरा ने विह्वल हो कर गाया

हरि तुम हरो जन की पीर।
द्रौपदी की लाज राखी तुरत बढ़ायो चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि धर्‌यो आप सरीर।
हिरणाकुश मारि दीनो धर्‌यो नाहिन धीर।।
बूड़ता गजराज राख्यो कियो बाहर नीर।
दासी मीरा लाल गिरधर चरण कमल पर सिर।।

दूसरा पद गाया

साजन, सुधि ज्यौं जानौ त्यौं लीजै।
तुम बिन म्हारो और न कोई, कृपा रावरी कीजै।।
दिन नहीं भूख रैन नहीं निद्रा, यों तन पल पल छीजै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर मिलि बिछुरन नहीं कीजै।।

तीसरा पद गाया

अब तो निभाया सरेगी बांह गहे की लाज
समरथ शरण तुम्हारी सइयां सरब सुधारण काज।।
भवसागर संसार अपर बल जामें तुम हो जहाज।

निरधारौ आधार जगत गुरु तुम बिन होय अकाज।।
जुग जुग भीर हरी भक्तन की दीनी मोच्छ समाज।
मीरा सरन गही चरनन की लाज राखो महाराज।।

यह मीरा जी की आखिरी वाणी है। ठाकुर वृंदावन चंद्र प्रकट हो गए 'आओ मीरा।' लोगों ने प्रत्यक्ष देखा, मीरा व्याकुल हो कर दौड़ी और हजारों लोगों के देखते ही देखते अपने गिरधर में प्रवृष्ट हो गई। भुजाओं में भर कर ठाकुर जी ने अपने में समा लिया।

नाचत नूपुर बांधि के गावत ले करतार।
देखत ही हरि में मिली तृन सम गनि संसार।
मीरा को निज में लीन कियो नागर नन्द किशोर।
जग प्रतीति हित नाथ मुख रह्यौ चूनरी छोर।।

भैया, इस कलिकाल में या तो चैतन्य महाप्रभु ठाकुर जी में लीन हुए या सबके देखते देखते मीरा बाई ठाकुर जी से जा मिलीं। एक और भक्त श्यामानन्द प्रभु भी क्षीर चौरा ठाकुर जी में सशरीर मिले। लोगों को विश्वास दिलाने के लिए ठाकुर जी के मुख में मीरा जी की चूनरी का छोर दिखाई पड़ा। अब तो हाहाकार मच गया। ब्राह्मण पछताने लगे किंतु अब क्या हो सकता था।

रोते हुए उस चुनरी के छोर को लेकर ब्राह्मण आए। राणा उदयसिंह ने बहुत विलाप किया। लेकिन अब कुछ नहीं रहा। उदयसिंह ने चुनरी को सिर पर चढ़ाया और अपने आसुंओं से उसे भिगो दिया। मीरा सदा सर्वदा के लिए भारतवर्ष के सभी भक्ता। के हृदय में विराजमान हो गईं।

मीरा जी के दिव्य चरित्र का जो श्रवण करते हैं उनके हृदय में गोपी प्रेम प्रकट हो जाता है।

***